

मराठी - कथा

द्वितीय भाग

मि ३१

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४२०/५-१३६ (५९८)

ग्रंथ नाम चिकित्सा नीतीशी

विषय आयुर्वेद



सजागमदेशमा॥ श्रीवीरकर्मचरीवप्रा॥

① श्रीगणेशायनमः परीसो नीयदुतवचन॥ बोलावी
ले॥ अटीप्रधाना॥ हणेलुंकातीचतुरशा॥ हाणा॥ राज
नीलीचातवावीगा॥ ॐ श्रीगतीसाहामस्त॥
कोण्हा नकरावे उदास्त॥ को न को धपरद्व्यास्त॥ त्य
जुनीया॥ २॥ सामास्त॥ ३॥ लीजाक्षीये जुनीगुतीगप
रकाया प्रवेराचीमती॥ पौ हो नीराणीवसारीघो
ऐसेसंगो॥ ३॥ गभीरतावगुप्त॥ समाममे॥ वीच्यरीत
एकदुलाजो॥ कापवी॥ साहीक॥ गभजया॥ ४॥

पाहाती सेवक सेवक॥ तव राया सी आटवत क
२॥ उबक॥ गुप्तदारी रक्षक॥ जोटे की ला आरने॥ ९॥ लेबे
ला उनी आणी ला॥ राये समगेम घेत ला॥ मुहुत पाहो २॥
१॥ नीश्वार ला ला॥ पुसर दीरो सी॥ ६॥ ही उली ने ना दे १॥
रा नगर॥ पाहाती ग्राम पटण पुर॥ नदन दीस गंग
लीर॥ श्रान दान करी ती॥ ७॥ हेरप ही उली प्रथवी वरी
तचे देरची लीये क नगरा॥ लय ला वसेंद्र गीरी॥ आ
तीर म्य वीर ली॥ नगरा समीप आला॥ लेवये
क सने वर दे वी ला॥ उदक व गभिर ला॥ कमळ पु
स्पे पारी पुगा॥ ८॥ लेथे स्थीर ला ला नायेक॥ कमेरि ला
२४॥ सी लीर नाना दीके॥ भाजव करनी या के तुका॥ पा
हाली सरो वरा ले॥ ९॥ पाहाती पुस्प वटी के चक्रा॥
तया वरी देर वी ला मलय सपी॥ राये धरो ला संकला
ची देची प्रची ली पाहा वया॥ १०॥ लुणे म्मा वी हा
आभासी ली पचर लुली चीर ला हिन ही पुर ली प
१॥ कु उबक॥ सी संगे लये वेष्णी ना वे कमी नी हा करी
ना १२॥ जवमी होरि जागृती॥ लेवरी न उटवी

मज प्रलीग तु वा वैर सो नी राव चीली प्र पाहात
 ३ आसावे ॥ १३ ॥ ये राखणे मा हाउत मा ॥ नी डाकरी
 पावे वी श्राम ॥ नीः क पटी वो कम ॥ नी डाकरी ३
 ॥ लाजा हाता ॥ १४ ॥ अत्मा काठी ला जगुला ॥ २१
 त्य सर्प प्रिकार केला ॥ धुंधा पत चा लला आ
 ली आनंदे करनी प १५ ॥ कु वडा के द ही देर वी लो ॥
 सुणे येणे प्रस्नं पाह आदरी लो ॥ लरी सी ही पाही
 न वही लो ॥ जो वरी य ई वो कम ॥ १६ ॥ अपुल्या स्व

देह्या सीग प्रवेश केला वी कम ॥ च्या कु डी सी ॥
 वी कम ॥ दृष्ट धरनी या ॥ नी रची ॥ सी द्रगती चानी लो ॥
 ३१ ॥ १७ ॥ केला वी श्राम ॥ पवन गती वर से जात ॥
 हे सादा कला पथ ॥ गुजनी ये चा ॥ १८ ॥ नगराम
 धे प्रवेश ॥ १९ ॥ रास जा गुन ओ दला ॥ तो मने कु
 वज के आन्याय केला ॥ मज सो जी ले वना सी ॥ १९ ॥
 मग परतोनी आलो येथे ॥ पाहनी गुल म म ह ली
 ले ॥ मग क रा प्रयाण ले ॥ जो वकारान सार ॥
 ॥ २० ॥ हे से मण गुनी लया री ॥ गे लाराणी वसीया

५) हेरवे कुज काचे ॥ २८ ॥ कुडि हेरवोनी कंटाळ ला ॥
 लपे येणे वीश्वा सधात केला ॥ कपरी कुडी धेनु
 ॥ २९ ॥ मी जरी संचरया
 चे शरीरी ॥ हा पाप रापी दुराचारी ॥ ~~किस~~ ^{१७} ॥
 नयेय ॥ कलीवी ॥ मुर डोनी माघारा चाली ला ॥
 ॥ ३० ॥ लगे ऐसे जरी दृष्टी पडे ॥ तरी मज ला दोष ध
 डे ॥ संभासी नीचे दुमी नहा त्या ॥ ३१ ॥ जरी बडे
 स्व संगि आना ॥ तरी ~~किस~~ ^{१७} ॥ तें चपेंत न ॥ दोर जि
 जरी जीवत ॥ वीर्य व ~~समान~~ ^{१७} ॥ ३२ ॥ दुर्ज
 नाचे संग ली ॥ जरी वरी ने ~~सक~~ ^{१७} ॥ पंकी पतरी
 ५४) नाना ~~कुरा~~ ^{१७} ॥ दुर्लक्षि वता सी ॥ ३३ ॥ ऐसी जा
 हे धर्म नीली ॥ जरी जाला मगरि तपथी ॥ सा डाप
 रमी लले ऐकी जे सकला ॥ ३४ ॥ श्लोक ॥ राकंटे
 पंच हरते न ॥ दराहा स्तेन वा जीन ॥ हारसी सहस्त्र
 हारते न ॥ दराहागेन दुर्जना ॥ ३५ ॥ टीका ॥ ल
 चारे कटका ॥ कैसा काळ पडतारे वोरवदा ॥ ३६ ॥

6 प्राण॥ ज॥ लीया होनी वार॥ येक येकान देख
 ती ३६॥ भवी राहे व जी वत॥ केवी लुके होण॥
 रंगता॥ लेसी बुद्धी आट वत॥ भोग्य संव॥
 ॥ ३७॥ मज काय आसे चीत॥ प्रसन्न भुत स्वा
 य॥ मी आसता॥ भोग्य करे की लामा था॥ सुवे
 य ब्राह्मणे॥ ३८॥ देसे हंगुनी चालता॥ जरी राही
 न सर्प देहियाती॥ तरी कोणी करील घाल॥ सर्प
 आहे हंगुनी या॥ ३९॥ पाहे अ धि धि गो भोग्य॥

वीक्रम
 चाले थोफे लथा कलप था॥ लव दे रवी ले वट व
 दा ठेला ले॥ ले थो करी प्रवेष्टु॥ ४०॥ चट चि॥ चरीन॥
 6A अ॥ ली वी रंगार॥ दृष्टी पडले ना व्यावे कली वर॥
 उम देह श्री ली कर॥ भलत याचे जीवनी ४१॥
 हे से वी व्यासनी मनी॥ लजी ली स्वपचि ग वस
 पी॥ सचरे रा व्याचे कुडी स्थानी॥ आली प्री ली
 फलनी ॥ ४२॥ मंगले थुनी पुडला॥ नंगराम ध्य
 भागी आला॥ जीव दक्ष॥ वरी बेसल॥ रवाली
 बहु रूपी पुतरले आसली ४३॥ ले वै सुनी येक

मेका करी सीला विदीका व श्रे आभरणे हार मुकु
 गा हाण पडली गुदरा करणे लें या सी करी लाकी
 तं बौद्ध गम होय परी सता हे कोनी जाता बोळ
 तता तें परी सावे श्रोती ४५ कोण मी या को
 ६॥ पधती कोण आस्यार कोण ग्राम कोण या ती ६॥
 तो न मा म ज प्रती संगा वा ४६ हे को न पक्षी
 याचे वचन पाहाली करी ॥ ४७ ॥ ध्व विद न स्या
 मी पुस ती आसा कारणे परी ज व की ये गुनी
 बेसा ये ४८ ॥ जी बी न धन की रं का मी पाप

श्री नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४९ ॥
 धीरा बही रापो ॥ ५० ॥ उदरा मरी मरी ल गाय का ॥
 क्री या ४९ ध्व आसे ४९ ॥ धर्म ली सी ध ध मी ॥ लु
 ज दे र वै नी हार ला ४९ ॥ मन स लु ४९ कू द र प्रेम ॥
 भर ले स दो दी ल ४९ ॥ म नी बी चारी पक्षी रा वी ॥
 या चा दी स तो स ४९ वा ॥ वा चा ४९ ध्व ४९ रु पा मी ॥
 ४९ ॥ नीः क ल क मान सी दिसे ४९ ॥ ऐ सा वी च ॥
 स न या मान सो ग ये गु न बै स ला स न्मु व स्थानी ॥

येर जाती लोटांगणी। घाली ली हेतु वत॥ ८१॥
बंहरा पी हणेली राया। ऐ के रामा गुण। लया॥
(४) ये के नासया राया॥ ये गुनी या जाले॥ ८२॥ रचे व
७॥ नेंदी ची राव॥ गहाण पुडली वरत रावा॥ ८३॥
रुता सं हेह॥ रवाया सी ना ही॥ ८४॥ राधो पुसेल
या सी॥ अरा रा तु बंहरा पी हण वी सी॥ ऐ सी
वी द्या ना ही लुज पा सी॥ जाल वरय होय॥ ८५॥
बंहरा पी हण रा म्या॥ से वदे ई लारी सरवया॥
म्या वरय करा वे राया॥ चकार वारव वा वा वी
द च्या॥ ८६॥ जाल मणे वी द्या कोण कोण॥ ते म
(४७) ज प्रती करा ची श्रवणे॥ गो वने न करत। मन ना मळ॥
१॥ व संगा जी जे॥ ८७॥ वी द्या रांगे बंहरा पी॥
वी क्रम परी सी साक्षे पी॥ ऐ कोनी हणेली सोपी
जाहे॥ बंहरा पीया॥ ८८॥ लुज सांगे न वी द्या
म न ये क॥ जे ने मोही जे त्रै लोका॥ रो की पा वसी
क न क॥ जी ल के पा ही जे ती लुके॥ ८९॥ बंहरा पी

१ ॥ प्रोजी पक्षी नाथा ॥ तरी रक्षी ले मज आ
 नाथा ॥ देह व्याधी न पीडीता ॥ जे स मेर लगे ह्यु
 २ ॥ त वंदे ने गला आर स माना ॥ धरे चरी लाग ले ही
 परा घना ॥ जाली १ तो जन आर गणा ॥ बहु रा
 पी आ पीर ॥ आसी ५ ६० ॥ वीक्ष्वा ७ ८ कार सांगी
 लोता ॥ बहु रा पी पट्टा फीरा जाला ॥ इमानी
 ल की कि भला ॥ सतर वीक्ष्वा साधी लीग ६१ ॥
 ते की क्ष्वा बोट बरी ॥ लेने साधी री पुरी ॥

१ ॥ सुय उदय जेना ॥ श्वरी काय करी ता जाहाला ॥
 २ ॥ दया के ले प्रातः ॥ आना देव पुजना ता डी ले क्ष्वा
 ना ॥ करनी या हारी स्मरणा ॥ सउ करी सारी वा
 ३ ॥ नोगणा ॥ ६३ ॥ वस्त्रे ७ ८ ॥ ककार ले ई ला ॥ र
 ४ ॥ ने ज डील सीरी मुगुट द्या लला ॥ का से सीमी
 ५ ॥ र वला पीला बरा ॥ ६४ ॥ आंगी चर्चि ला ये दन ॥
 ६ ॥ ज बाही कर मुरी ॥ ध कपा ॥ माथा खोची ला
 ७ ॥ के कली पाना ॥ तुरा मुक्ता फळा वा ॥ ६५ ॥ वामा
 ८ ॥ गी बांधे कटार ॥ दक्षिण भागी फरवा लोमरा ॥

१॥ ला भर ले शर ॥ ते प्रहरी भागी बाधी ले ॥ ६६ ॥
वो उण वेत ले करी ॥ धनु रय बाही ले सीरी ॥ वी
१० रकं कण बाधी ले करी ॥ दो दडी चामर ॥ कव
णी ॥ ६७ ॥ ऐसा तो नाहा वीर ॥ स वेव धुभा सु
२ ॥ हंरा ॥ शंगार के लामनेहार ॥ जाणे देवाणा
सरली ॥ ६८ ॥ ऐसा तो वीर उन्न ला वक्र ॥ व
णी वीरा लनेना ॥ जो वोळवी पारे ला ॥ ले का
म व धुभा ॥ ६९ ॥ पनगती तो महा वीर ॥ गजे
वा की आणी ले डुरा ॥ भद्र हो लाम पवर ॥ जो

३ ॥ धउ धउ ॥ बाण भर भर ॥ वाज ला ॥ ७० ॥ येक
येका ले हा की की ॥ वेव ऐसे लुगती ॥ रारप
उली क्षिती ॥ ले पाहे वीर जन ॥ ७१ ॥ आधी
४ ॥ च बहु राणी माव कार ॥ वीर वीक्रम न विचेच ॥
पुठार ॥ दार वीर चमकार ॥ आती बा शीर
जानी ती ॥ ७२ ॥ ल व आ पुवी ला ले थोर ॥ भुमी
चरी पजी ला वाम कर ॥ दडी रक्त चामर ॥ आ
दुध थ व थ वी ला ॥ ७३ ॥ वो उणी आसे मुही स
वेची ॥ द्यय रणा रूही ॥ लेणे दण्डण ठुट्या

(11)

924

924

सभनेम।सीपे॥८॥दृष्टकरीरवगसेहीत॥
गगनपंथेआसेयेत॥तयामगेपर्वत॥कोथ
कापडला॥९॥घायलागलेसबका॥नाहीरेवा
चयातीक॥तयआलेसीरकमका॥हारयेवदन
करीत॥१०॥वीराचाज॥लाघात॥तेराणीव
साहेकीतीमता॥प्याचीश्रीआलीघायत॥११॥
पीटीवक्षस्थलासी॥१२॥जगेगावीरभुपाका॥
तुजाजीकंमकला॥अर्गीमेलासीबहुतवेका॥
परीहेसेघडलेनकते॥१३॥आहारवचलामा
हामेरा॥जुलथला॥सारीयराकाफुरलासागरा॥दुरवा

वाक्प

वीक्रमथोरमनीआनंदला॥हजेमलाग
१४॥कहुलाजीमजकारणे॥१५॥जेसेचरीम॥
रघुनाथकायिकारणे॥हापुमंतरीतसिला
रुधीकरणे॥तेसातुवेनपुपवने॥हीउसीआ
लालागी॥१६॥सोमदंतामनी॥क्रासथोर॥
सादुंगीकरीनमरकार॥कहईभरलाआम
लसागरा॥आलीआलाहोदमोनसी॥१७॥
जालीमजतपाचीसीधी॥तुजदेखीलेक्रपा
नीधी॥हारतयारकळचीलाप्याप्याधी॥
जालोकल्याक्रपाधी॥१८॥वीहंगमउलरला

(11)

वृद्धालकी॥ सोमदंतला की गणकदयक
 मकी॥ मगसंगलाजातासककी॥ वृत्तांत
 कंबजकाचा॥ ११३॥ जोकासनेचा वृत्तांत
 घडला॥ तोसमुकआवद्यासांगीतला॥ तव
 ११४॥ तुजदेखीलेडोळा॥ आकस्मात॥ ११४॥ वीक
 मळणेसोमदंतावादेखीलेआसेतआपु
 येवीसा॥ लेथेचाललाआला॥ ऐसाकरीउपक
 म॥ ११५॥ सेरामेरावयाऐकयेक॥ संगेन
 दलशेनायेकयलुक॥ पुरीसोनेमगेवीक्रम
 शोक॥ ७३॥ तायेधुनारवारकोवो॥ ११६॥

२५
 श्रान॥ लध्याकरावीसारीलपणि॥ देवपुजामांजे
 लध्यान॥ रामरामजपतले॥ ११७॥ सरलाध्या
 नाचाआवत्यरा॥ सभामेंउपीजाताबैसकरा॥
 लणेरानीघडलाआनाचारा॥ मजपारुनी॥ ११८॥
 ऐसाजवगोष्टीकरीली॥ तवलेकासनाआली
 दुवली॥ जैसीरावणेप्रेरीलीशकी॥ सोमीत्रा
 लागी॥ ११९॥ तीसदेखोनीयासुनुरवा॥ दुरा
 वसपाहेआधोमुरवा॥ नकरीआवलाकनमुरवा॥
 वेहुसमनधरीलीचे॥ १२०॥ तवनेअप्पीहसलहा

सत ॥ देरा बल करी दंड चल ॥ मणे देरि गिउ चीला ॥
 रात्री येण केचे ॥ १२४ ॥ येर मणे माग सडक
 रो ॥ जे वसे लुसे अंतरी ॥ ते घेउनी या सप्तमी ॥
 १२ येथुनी बीज कराचे ॥ १२५ ॥ मज हेरवोनी यास १२
 मोर ॥ सत पधरी सी घोर ॥ तरी देरि कास
 १३ त्वरा ॥ नावी या सी ॥ १२६ ॥ आला न करी आनु
 मान ॥ रावादे गिउ या न ॥ जरी देसी लया ज
 भरनी सुखी ॥ तरी आगी कार न करी त्या
 चा ॥ १२७ ॥ ऐसे कोनी उला ॥ थोर वेचले याचे

१३४
 लो शरण गेला रच नाथा ॥ वधुनी पारा दिस स
 मरता ॥ रा जरी स्थापने ॥ बीभी राण ॥ १२८ ॥
 धुर बाळक धाकुले ॥ ते देव राये अंगीकारी
 ले ॥ त्या सी बैसवी ले आठ जप देउनी ॥
 १२८ ॥ ऐसी साक्षी वहुत हेता ॥ रित्ता रा जरी
 रकथा ॥ ते सापरी मज मागवत ॥ लुसीया
 ऋपेन जाली ॥ १२९ ॥ इव ही काही दीधले ॥
 ते माया सी दारव वीले ॥ लो मणे लुसीया कळे

प्राप्ता जा लो। तथे मा सा काय प्रकारा ॥ १४८ ॥
 जात। मेक आ वधारी मा सै सणी लले करी।
 १५ मज ने गुनी बा जारी। वी क्रया ला कर। वा ॥ १४९ ॥
 १९ मा सीया रे लु के कन कन रे ल जा लु के। ते ॥ १५० ॥
 १९ धे गुनी के लु के। लु वा जा वे म हा सी ॥ १४८ ॥
 ले। म जे गा म गं ज म सी। लु ज करी ला म ज आ
 दु मा सा धी प्र। सी। जाली ये बान वैरी
 प्र। सी। रिक प्र। सव्य ल ॥ १४९ ॥ जाला ॥ १४९ ॥
 के सा वी का वा ल सा आ म। लु वा म च
 मा ला पी ल। हा क। य वा द करी ला। नर का
 प्रली जारि नि ॥ १४८ ॥ जै र। र। र। र। का जी म ग
 १५९ सी ॥ अ। नुर र्वा ड गंगे हुन दुरी। चर फु डी ल
 प ड री आ रे १४९ ॥ त वे थ क मा गरित आ
 ल ॥ १४९ ॥ ल या सी म ग री ये का कु ल ली। म जे म
 ज ने गुनी धाली ज वा प्र ती। मा सा जी वा लो वा चे
 ल ॥ १४८ ॥ लो म जे लु जा का ये र श्वा स ॥ अ। ती
 करी री न। र ॥ जै रे वा य से क। स क द वी ल ॥ १४९ ॥

मंगरी लगे मासो १५ रासो लो न करी वा गुहासा ॥

(15) येरे मान ला वी श्यासा मोट बाधीली मगरीची ॥

१६॥ मोट बाहु नीसीरी ॥ अ केश लांगाली

२०॥ ॥ लव गुद के पुरे मगरी ॥ कोट पर्यंत जासे ॥

१८॥ येर लगे गुल परी ये लगे मगरी लगे पुटे ॥ २० ॥

चा ल की ची ल ॥ हो ला चाल की ल चाळ ची ल ॥

ने ला कंठ परी य लगे ॥ के छ लगे सोडी प ॥ १८॥

लो जय सोडी मोट ॥ लय ये रण धरी बुळ कट ॥

लगे १५ टा ॥ रागाली ॥ कट ॥ आहार देव नी नी ली ॥ १८॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com